ISSN : 2583-2948

चलते रहो...

दिल प्रीत कौर
सुलेखन विशेषज्ञ, कवयित्री, समीक्षक
दून इंटरनेशनल स्कूल, मोहाली, पंजाब

चलना किसे नहीं भाता
दूर ऊँची नीची पहाड़ियों में घूमना
और फिर खो जाना

बबूल की झाड़ियों से सिमटकर बचना
वो जंगली घास और
कांस के झड़झाखड

तलाब में अकारण पत्थर मारना
बरसते पानी में भीगना
अच्छा लगता है...

सर्द हवाओं से
ठिठुरती हथेलियों को सहलाना
धूप में आलस्य रहना
किसे नहीं भाता

ज़िन्दगी यहीं तो है
हमारे आस पास बिखरी हुई कई रंगों में
समेटना तो आप को ही है...!

चलना सब को भाता है
चलते रहो
ऐसे, कि नदियाँ बहती हैं जैसे